

2226

7. नवरात्रव्रतम् - सम्पूर्ण

20 - अक्षर

कर्मकाण्ड

मैथिली लिपि



स्त्रीगणेशाय नमः॥ ॥ ज्ञानमप्राप्तानां ज्ञानमप्येव कालौ संप्रकीर्तयेत् ॥ देवीपुष्पाभाषणाय कर्ह
णः कलरास्थापनं च कर्हि ॥ ॥ स्थोतामेव तिष्ठति मिर्गीयतीति ॥ ॥ स्थोतापूजितवतीति ॥
मयी गौः पूजितवतीति ॥ ॥ जेतोकाय तनयाय नमः ॥ ॥ ज्ञानकलरो ज्ञानवतीति ॥ ॥ तंतुं तं
वृत्तं ॥ ॥ इमं संप्रकीर्तयेत् ॥ ॥ अवतिती मरुतस्य वैश्वामित्रो नेतृः पत्रमानस्यो मोक्षकृतिः ॥ ॥ अव
तिती मरुतः ॥ ॥ जनेन त्वं निदिष्टा ॥ ॥ प्रवोच मे द्वितया वसिष्ठो विदे देवास्त्रिजुषः ॥ ॥ प्र
वोच मे देव गन्तव्यः ॥ ॥ इति पञ्चवां निदिष्टा ॥ ॥ ज्ञानाय स्वगीतमः सोमो गायतीति ॥ ॥
॥ निद्रात्पठतां वासवे वोद निद्रावानुजुषः ॥ ॥ इन्द्रमग्निः पत्रमेजीव विन्देति ॥ ॥ गं
वाना मितया ज्ञानं संप्रकीर्तयेत् ॥ ॥ इति गोमयः ॥ ॥ गायत्या विश्वामित्रः सवित्या
यतीति ॥ ॥ गोमयः ॥ ॥ यदि न ज्ञानी तस्य रागा वायः सवित्या गायतीति ॥ ॥ इति पञ्चन
नि ॥ ॥ ज्ञानो ज्ञानीति तस्य ज्ञानं वीर्यं निदिष्टं गोमयेन ननु ॥ ॥ ज्ञानो ज्ञानीति ॥

न क्वांते निष्ठा नो तो सु स ३ ७ म स नो क्वा नि नु ल क न क्वा नैः ॥ पारां को दं ड सि नु न व म य ग म म
 पा नु रा पं च क्वा मा नु ॥ नि त्ता मां स क्वा मां ति मा य न विल स त्पी न व नो न्ना त्पा दे वी क्वा ला की
 व मां त व त्पु स क नी प्रा मा रा द्वि प न नि ॥ ॥ १ व मा त्ता नि दे वे य क्वा दे वं स पू ष्वा क्वा ने तु ॥
 ३ ॥ मां डी डीं य न ल व रा न स यो रं रं स ॥ प्रा मा र्प मा मा ॥ ३ ॥ मां डी डीं यं रं स ॥ ३ ॥ व र द
 स्थि तः ॥ ३ ॥ मां डी डीं यं रं स ॥ स वी क्वा रा की नां स वे दि या मा ॥ ३ ॥ मां डी डीं यं रं
 सः ॥ वा क्त न य नु यो व क्षि त्वा प्रा मा मा र्प यै वा न त्प स य यो य रं न वि न ॥ की व ० ति ह ०
 र्वा मा ॥ ॥ त तो द यं ग ह ० ३ ला क्वा ने तु ॥ ॥ स योः प्रा मा ध ति ह ० तु ॥ स यो व मा तो न दं
 तु ॥ स यो दे व ल म नी यै मा म ये ति य क व ने ति ॥ ॥ स त ध मा वे न स नं ण ॥ ॥ स की वं ण
 ला ॥ ॥ शु वा यौ नि ति त वं क पि ला ॥ ॥ क तो दे वी ग य ती नं ण ॥ ॥ त तः क ती ॥ ॥ स
 ग तं दे व दे सि स ता ग य ल सि मा ग तः ॥ प्रा क त ल म रू णा मां ना स व ल नि पा ल य ॥ ६ ॥ की र्ण
 का म सि ण छी स्थि नो त व र ता य नः ॥ स्या नि णं तु ता दे वा स्या यं प नि क ल य ॥

या व द्वा व ही स्यु र्णीः ति ह त्प ति पा ति नः ॥ ता व ल य त रा दे वा यो रं त क्वा न कं य ॥ त न व
 नु दे व दे वे सि ल पि ता स वे दि तां ॥ ये न नु ये मा त न व नु त्वा वा पं च न य न ॥ ये न नु ये मा दे वे सि
 र्वा यै र्णां स नि ति वे ॥ ॥ इ ति न मे तु ॥ ॥ प त रं तं स वी दे वा नां स मा न ॥ ॥ दे व सु ल
 सं तं क पि ला ॥ ॥ र्वा ॥ ॥ स य नी ते ॥ ॥ त्र वी ल ला टे ॥ ॥ प्रा वि ति ह त्प ता द न ति ॥ ॥
 रु त्ता प्र ति ह ॥ ॥ य य वै प्र ति ह त्प रु त्ता ॥ ॥ र्वा ॥ ॥ उ र्णी ला य न सः ॥ ॥ रु त्ते ति
 सं र पं ण ला ॥ ॥ दान पा ल पु क्वा ॥ ॥ उ र्वा ने ॥ दान सि यै ॥ ब्रा ह्मै ॥ मा ये र्वा यै ॥ ॥ दि
 वा ने क्वा ॥ को मा यै ॥ वै क्वा ॥ प र्वा वा ने ॥ वा मा यै ॥ मा ये यै ॥ रु त्ता वा ॥ वा मं डी यै ॥ ल क्वा यै
 दान पा ल पु क्वा ॥ ॥ स य नी क पु क्वा ॥ ॥ सा ना न र क्वा ॥ सु त प्र क लै ॥ कु र्वा यै ॥ स नं
 ता य ॥ प रि क्वा ॥ स म त्प रु त्ता य ॥ स मा डी पा य ॥ क ल व त्ता व न वा रि का य ॥ ये स प्रा का
 मा य ॥ नि ता मा ति ग य य ॥ सा मे या दि न ॥ ॥ स य ॥ व न नु पा य ॥ व क्वा व मा य ॥ स ना
 य ॥ सि न्द्र मा य ॥ र्वा म व मा य ॥ वै र्वा य ॥ नु त नु पा य ॥ पा त व मा य ॥ वे र्वा य ॥ ग क्वा

[illegible]

३२०॥ ॥ नमः ॥ उगीमावाचयामि ॥ ॥ ज्ञातैवागच्छामस्तु ज्ञावाचयामि ॥ ॥ ज्ञावाचयना
विनामस्तु ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ कात्यायनार्थविज्ञानैकनाम्ना निनीमामि ॥ तं नो उगीमावाचय
उगीतु ॥ ॥ उगीमावाचयामि ॥ ॥ देवास्तु तमंतस्या ॥ ॥ मां कर्तुं गच्छामि ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञाया विनीमस्तु ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ उगीमावाचयामि ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञायेकमेव विना ॥ ॥ उगीमावाचयामि ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
नमः ॥ ॥ उगीमावाचयामि ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥
ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥ ज्ञानुपपद्यते ॥ ॥

तिः कलौ द्वैतं द्विपुर्वैः ॥ संप्रकं लामेव कु वी त प्राणाया मपुनः सन ॥ ॥ पुर्वो विनिते पवं
 गम विरोधता विरोधायां ततिथौ मम स मस्तती प्रसिद्धा धी ज्ञाय ममो गत गता
 विरुजला ता लिक न का पा स्या धी प्रवर्षौ ता निवृण धी स म स विमो प्राप्ता धी दिवा
 तो ग वा स्या धी नृ त वे त निरा यो वार त ला कि ता कि निवृज न रा न स वे ता न म य स पी नि
 वृति मये त्मा ता धि यो न वा प्रा दिश नृ ना न स मु न व स मु नृ त नि न य न मा धी स म स
 दे व ता पु का पी ल सि धा धी ज्ञ सि धो मा दिश रु सी ला दिश धी गं गा दि स स त्ती धी द्वा
 न पी ला वा स्या धी स वी क न व सी क न मा धी ज्ञ कं कं रा का मा स्या धी वा क वा ने म य ती
 प्रतिज्ञा सि धा धी ॥ ज्ञां दे व ता स यि त सी उ गी पु कां सी म य ल क्षी पी ता धी म य ल क्षी
 पु कां वा द्धि धा धी स न स्य ती पु कां ॥ ॥ स्या ॥ गं पुं ॥ क ल रा वी नं रां वा वी नं व
 ता ॥ ॥ ज्ञा स हं पं ग ता ता ॥ ॥ दे व ता स्या न मा ग ता म हं पा री न पु र्व कं ॥ म य स
 मि का वै दु र्गी कां व रं स तं पु र्व कं ॥ मु क्ता दा म स मा की र्ण न नृ वै दु र्गी कां ति त ॥ ॥

३

संप्रकं लामेव कु वी त प्राणाया मपुनः सन ॥ न नृ या म ना म न पं ह वि वि ता नै न प रो जित ॥ ॥
 का त्ती न पं क क ज्ञा नै कं त की म सि का दि ति ॥ न द्वा ति सि त मा ला ति सु वृ ता ति ने लं क त ॥
 य त द्वा न स म ये तं ग्रा ये ह्यौ ता ग म हं ॥ ॥ उ त्त म्भो क ल का नै न न वि त ॥ ॥ न व न
 नृ स वि त सौ ता ग म हं पा य न म ॥ ॥ स हं प ग ता न स ॥ ॥ ज्ञा य द्वा न पा ल पु कां ॥ ॥
 पु र्वे द्वा ने द्वा न सि धौ ॥ त द्वा य ॥ उ त्त द्वा य ॥ यं च नि ग ये ॥ प स नि ग ये ॥ नं दि नै म य ला य ॥ न दि
 ता द्वा ने ॥ क ला य ॥ प्र क ला य ॥ नि न पा नि ग ये ॥ न नृ नि ग ये ॥ ग तो रा य ॥ वृ ष ता य ॥ प सि म
 द्वा ने ॥ रु या य ॥ वि रु या य ॥ कु र्मी नि ग ये ॥ म य नि ग ये ॥ नृ नि नि टि नै ॥ स कं द य ॥ उ त्त न
 द्वा ने ॥ पं ड य ॥ प रं ड य ॥ म य नि ग ये दि य नि ग ये ॥ पा वी तौ व रं स य ॥ ॥ य त द्वा न दे व ता
 ता न म ॥ ॥ द्वा न पा ल पु कां ॥ ॥ ज्ञा य पी क पु कां ॥ ॥ म ग्ने उ गी ये ॥ ज्ञा ग रा द्धौ
 मु ल प्र म तौ ॥ कु र्मी य ॥ म नं ता य ॥ पे न व ता य ॥ उं री का य ॥ वा म ता य ॥ मु मु द य ॥ ज्ञा
 न ता य ॥ पु न रं ता य ॥ स्या वी ती मा य य व ती का य व ता य ॥ प सि वी ॥ स्ये त वी न

[illegible]

गाय साय जाय ल वाय नाय ल प नि वा नाय ल र कू ये ल वी ल कान तु नि ता य स्त्री उगी प नै ख
 नी पा र्वी स्थि ता य ल ३ वाय ॥ ३ ॥ आ ना गु प ना न ल ॥ ॥ न ॥ न ल ये ते को नि प त ये रा द्वि द
 स्ता य न कू व णी य मे न वा य ना य सां गा य ॥ ० ॥ य सा य ये ता नि प त ये उं रु स्ता य नी त व णी
 य म दि न वा य ना य ॥ सां गा य ॥ ० ॥ नं नि नि त ये न को नि प त ये स ठ ग र स्ता य क ळ व णी य
 न न वा य ना य ॥ सां ॥ ० ॥ व ० व नु गा य रु ता नि प त ये पा रा य स्ता य रु त व णी य म क न वा
 य ना य ॥ सां ॥ ० ॥ य ० वा य वे प्रा णा नि प त ये मं कु रा य स्ता य हे प व णी य य नि णी वा य
 ना य ॥ सां ॥ ० ॥ स ० सो मा य न रु ता नि प त ये स ठ ग र स्ता य रु नि द्र व णी य क ळ व वा य ना य
 ॥ सां ॥ ० ॥ रं ० री रा ना य वि द्वा नि प त ये वि रु त य स्ता य ये म व णी य वृ ण त वा य ना य
 ॥ सां ॥ ० ॥ रे ० रु का णे लो का नि प त ये प म य स्ता य रु त व णी य ॥ नं ल वा य ना य ॥ सां ॥ ० ॥
 वि ० वि ष्णु वे वा ता ना नि प त ये व द्र य स्ता य क ळ व णी य ग नु उ वा य ना य ॥ ० ॥ सां ॥ ० ॥
 उगी प न नै ख नी म द्वा का नि म द्वा ल म्नी म द्वा य न स्य ति पा र्वी स्थि ता य व ० वि ष्णु वे

वावस्थिता॥ ज्ञावाययासिउमीतासाभावनमसंभुता॥ ॥ उमीतै॥ ॥ ज्ञावायन॥
 ज्ञावाययासिदेवेसिसिचनं॥ वीसेविते॥ ज्ञावासिवत्तुपुकांशुदीव्यसुनवंदिते॥
 मन्नातनहो॥ ॥ ज्ञावायनं॥ ॥ विद्यात्मानमरोललोककननीदेवीसिमामिज्जुनामि
 सुकाकलिततुलितवैनेनवांसना॥ तद्वातमृत्तुनासुनेदंमकुपप्रतात्पीलानांकन
 द्यायानंजितपादनीठनिकसुमिज्जाधीनंरावना॥ ॥ सनस्यतौज्ञावायन॥ ॥ ज्ञास
 नंसर्वतोतदंसमीहिकतुलना॥ अद्यामाउमीवनदेमदिनासुनमदिनी॥ ॥ उमीतैज्ञास
 न॥ ॥ मानिलैवेदुर्गुणागानादिजित॥ स्वमीसिंहासनांतद्वीथानातसुनेस्वनि॥
 ॥ ॥ मन्नालहो॥ ज्ञासना॥ ॥ सिंहासनेकुसुमगंजिमानोदनेस्त्रिविजातिमोतिनसि
 लातिपयासमासे॥ मातनिनीदसदराहिनृतिस्त्रिवाणीप्रसीदममदेदियमानने
 हो॥ ॥ सनस्यज्ञासना॥ ॥ विमोदवद्वतेदेविनेतवयविनाहिते॥ तद्वानांमुदि

विमयनं

कानीर

देनितंरंपायमगुलागमे॥ ॥ उमीतै॥ ॥ ॥ पाम॥ ॥ पात्रंज्यामवनदेयककिंनसेवि
 ते॥ मृत्तुकांवनसंकारेमन्नालहो॥ नमोस्तुते॥ ॥ मन्नालहो॥ ॥ पाम॥ ॥ त्वत्पादनमृत्तुग
 लेपनिदत्तमेतापययसकलसंपदिसिदेतु॥ संपदितंरिनसिमेविनेपुंणयोगाकाककाय
 मानसुक्तंउनितांदिनसु॥ ॥ सनस्यतौ॥ ॥ पाम॥ ॥ ॥ जलंकुंनृत्तं॥ कुंममगुनसंभुत-
 ज्ञापीगुलागुमीतंवीतातंमयागुना॥ ॥ उ॥ ॥ ज्ञापी॥ ॥ ॥ गदीव्यापीमयाउतंसुनासुनम
 स्तुते॥ तैलोकककननीतादिवैकुंठमृदयांगने॥ ॥ मन्ना॥ ॥ ज्ञा॥ ॥ ॥ गुणाकतादिपीलमि
 स्तितमस्पीमेतदुतंमयातुवनमातनिदेगुलाग॥ संपदितंरजमतिवीरुकरुणतपतीहोकुंनवगत
 उविजापमनेनवरी॥ ॥ स॥ ॥ ज्ञा॥ ॥ ॥ नमस्तेलोकककननीसर्वीताविशदिनी॥ गुलागाव
 मनंवीताउमीतंसुनेस्वानी॥ ॥ उ॥ ॥ ॥ ज्ञानमनीय॥ ॥ मन्नाउतमिदंदेविगुलागावमनीय
 क॥ ॥ पामाप्रियैपमृदस्येपमन्नातमिथैरुते॥ ॥ म॥ ॥ ज्ञा॥ ॥ ॥ मन्नाउतमिदंदेविगुलागाव
 मनीयक॥ ॥ सानदेरावततामैसर्वीविगादिदेवते॥ ॥ स॥ ॥ ज्ञा॥ ॥ ॥ ॥ निनीनसमागुहंनै
 दंकनकनताकन॥ ॥ म॥ ॥ पकंमयाउतंत्वंगुलागविजंलके॥ ॥ उ॥ ॥ ॥ म॥ ॥ पकं॥ ॥ म॥ ॥

٤

[illegible]

[illegible][illegible]

2

जमदग्नौ। कर्मकौ। ककह्नौ। सगमस्यै। पहाग्रगनिगौ। वाद्यौ। किकंनिगौ। पतवतुनिगौ।
नैनवौ। तारिगौ। कोनिगौ। मंत्योनिगौ। काला। ह्यौ। गार्दिगौ। पद्मौ। कंकालौ। कुकीदिगौ।
विकह्यौ। प्वावविह्यौ। सख्यौ। दुष्यंत्यौ। ह्यौ। शालिगौ। गुहायै। पतुधन्यौ। कलायै।
नौ॥ ॥ उगीमयाकाहिमयालमिमयासवस्थतिदै॥ ॥ योगिनीवृक्षाः॥ ॥ स्त्री ॥

ॐ शंतिः शंतिः शंतिः

ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४० ॥
ॐ कनकलोकस्य नमः ॥

ॐ क न लै न सः
ॐ मालिनी ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਰਾਂ ਨੂੰ
ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਰਾਂ ਨੂੰ

ॐ हरे वास्यै
३१५०॥

ॐ सावित्री नमः

પ્રાચીન ગુપ્તા

[illegible][illegible]

प.

[illegible]

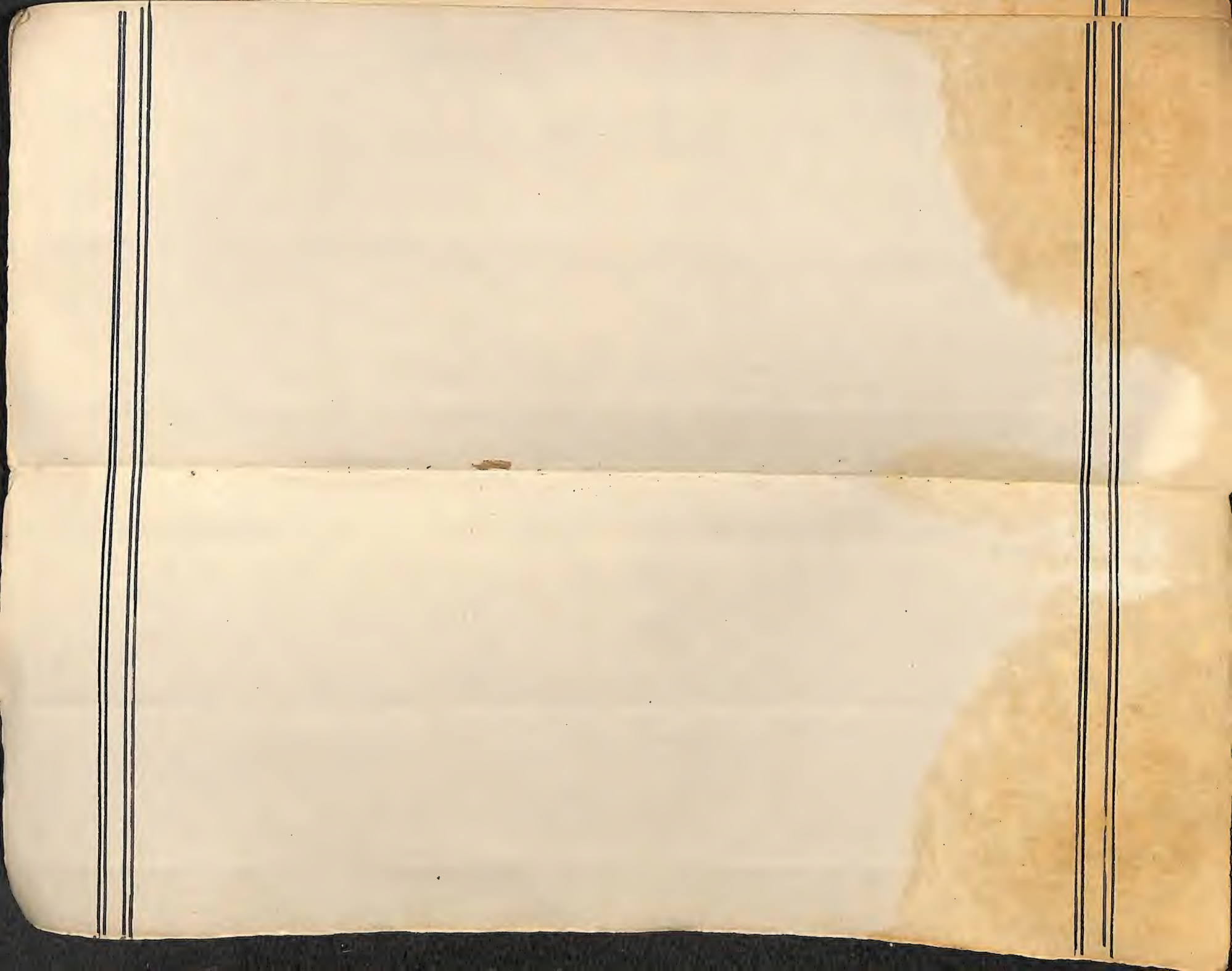
एतिपनधनानुविनपादपाठसिधे॥रात्रिपुनरीतिविश्रुतिदिनमात्रा सिधेनमःपितामहतेर्य
 नरुपेवौसिधे॥ ॥२०॥ ॥नमस्तुभ्यम्॥ ॥दासोऽनितमस्तुतानंमस्तुलोकानायाकि॥
 नमस्तुभ्यम्॥देवितादिमांमनमेवनि॥ ॥२१॥ ॥देविप्रपन्तातिदनेषसीदप्रसीदमा
 तर्कितोस्वित्त्या॥प्रसीदविश्वेनिपादिर्विर्वलसीयवनीदेविनयनस्या॥॥२२॥ज्ञानानुता
 नगतःस्वमेकाग्रसीयनुपेमायतस्थितासि॥२३॥पाश्वनुपस्थितयातमेनपायतेकस्तु
 मलंप्पावीथी॥२४॥तवैकवीरादिनेतवीथीविश्वस्यातीर्णपनमासिमाया॥२५॥मोदितने
 विश्वमस्तुमेतलवैप्रसन्नातुविश्रुतिदिनेः॥२६॥विश्रांसमस्तुस्तवदेवितैरास्त्रियः
 समस्तालकलाकनगु॥२७॥कयापुनितर्कितैतस्मातेस्तुतिस्तकापनावोद्विः॥२८॥स
 वितुतास्त्रिकेदेविस्पर्णमुक्तिप्रदालिनि॥२९॥सुतास्तुतयेकावातवर्तपनशोकृत्॥३०॥अपदे
 स्पातुदिनुपेमाकनस्यायसिधेति॥३१॥अपगीपवगीदेदेविनानायातिनमोस्तुते॥३२॥क
 ताकाद्यादिनुपेमापनितामधवालिनि॥३३॥विश्वस्यापनतेरावेना॥३४॥अवेकलसांगले
 दिवैसवीथीसाधकोरानापोखानकेगौनिता॥३५॥अपुनितिविनितानांदिनु

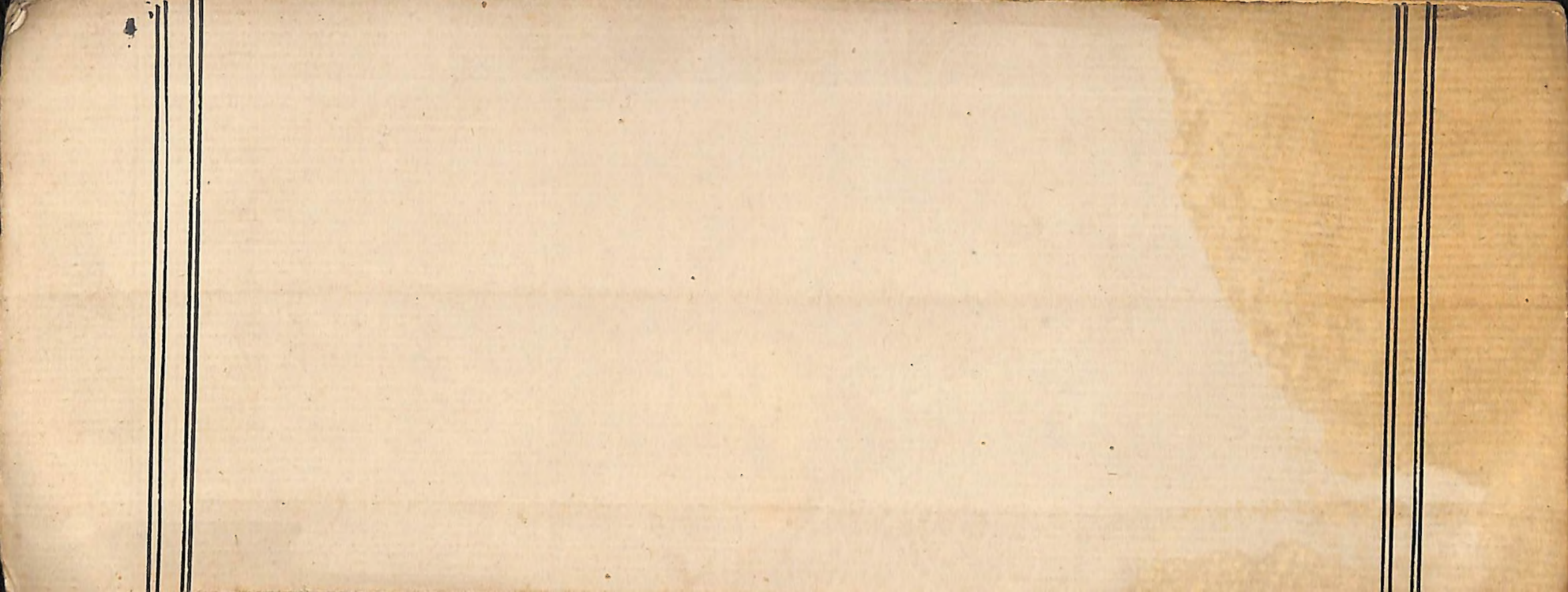
तेसनातनि॥गुणासिना॥३६॥॥रात्रिपुनरीतिविश्रुतिदिनमात्रा सिधेनमःपितामहतेर्य
 विना॥३७॥॥अस्यस्तुविश्रान्त्येवुन्नामीनुपेमाविनि॥३८॥रात्रिनिकेदेविना॥३९॥वि
 उतवडासिधेनेमयावृत्तवादिनि॥४०॥येरवनीर्यनुपेमाता॥४१॥अनुककुटुतेमया
 राक्षितले॥४२॥मौहानीनुपेमातेना॥४३॥रात्रिपुनरीतिविश्रुतिदिनमात्रा सिधेनमःपितामहतेर्य
 वैकवीनुपेमा॥४४॥गदीतोयमयायदेद्वोऽतवृत्तले॥४५॥वचानुविशिष्टेना॥४६॥अ
 स्त्रियनुपिपोथेमादुतैताकलोयमे॥४७॥लोकातामास्यदितेना॥४८॥॥२॥किन्नीदिनि
 मयावृत्तस्यननोक्तले॥४९॥वृत्तमायनेपैदिना॥५०॥अपिनुतीर्यनुपेमादतैताम
 मातले॥५१॥अनुपेमावावेनानायातिनमोस्तुते॥५२॥॥३॥अकनातवदेविमोमातावि
 त्तुजातो॥५३॥अष्टमंमयातेना॥५४॥॥४॥लक्षितकंक्तेमयाविश्रुतिदिने॥५५॥अ
 याताविश्रुतिना॥५६॥॥५॥मेलेनर्यतिशिष्टेनुतिनातवितासि॥५७॥निजेतंवसी
 देरोना॥५८॥॥६॥अवेर्यनुपेमावेरीर्यवेराक्षियमन्विते॥५९॥तयेतास्त्रादिनोदेविगगीदेवि
 नमोस्तुते॥६०॥॥७॥तदेवतंलौशांलोवनतयनुजित॥६१॥पातनःस्ववेतीतिताःकाता

गनिनमोस्तुते॥१४॥ स्वात्मकानां ह्यतः शरीरात् न च दृष्टं॥ विमुक्तं पातनो नीते तदका
 निनमोस्तुते॥१५॥ श्रीनाथि१ विमोततां नमो तावी वनं निह॥ सूर्य किं च नृ निगो॥ प्रचाल
 निनमोस्तुते॥१६॥ ॥सी॥ ॥सी॥ ॥कुं कमेन स माय कुं न देनेन विमोसित॥॥ निवृत्त
 तेम स उ कुं चानापी० नमोस्तुते॥१७॥ ॥कल्याणी कमले उगी मायी मुका निके दीवे॥ सती
 निती सदानं देराना नै नमोस्तुते॥ ॥कात्ता च नार्थ॥ ॥उगीथी॥ ॥उदमपी॥ ॥नीमसा
 गन सतं तेन मसै लोका वदिने॥ ग्याणापी० स्यात्तं स्यात्तल निनमोस्तुते॥ ॥विष्णु नारा
 र्थ॥ ॥अचाल चो॥ ॥उदमपी॥ ॥ब्रह्म सान स्यात्तु ते ब्रह्म काये स्यात्तु॥ क
 रा उवी कत उ तं चानापी सन स्यति॥ ॥ब्रह्म पद्मार्थ॥ ॥सन स्यती॥ ॥उदमपी॥
 ॥ ॥धार्मिकं निगो॥ ॥उदमेत विद्याये तपो न के ता स्य सदे स्व नि॥ देवे तपो मनु जे ता स्य त
 ये ता स्या दि मां सदा॥ साना स्य वी वा नां दि मां स्य वे स्व नि॥ १७ तमे ता गाला वा नां स म दे दि
 स्य वे स्व नि॥ ॥उगीथी॥ ॥आधीन॥ ॥१८ प्रिये पद्म निप स्य स्ये पद्माल दे पद्म रत्ना
 लता नि॥ विष्णु धियै विष्णु मनो नु क ले लता १७ मं रं उरिं निगो॥ ॥अचाल चो॥ ॥आ
 धीन॥ ॥१९ सुक कृप १९ द्य स्ये वरा त व वा न विष्णु ला द लते॥ कर्षना ज ल दे वे वागी रवनी॥

भाग्येष्टा मरु उ॥ ॥सन स्यती नमः॥ ॥सी॥ ॥स्ववी तस्मै तमु सौ स्यात्तां गंधा
 मेततः॥ कतां कलिपुटः स्मिन् नृशाली ये उति कां दिवा॥१०॥ सप्त द्वीप स्य उतां कला वल नरी
 उता॥ ॥उजा प्रद निगी कला त कृपा कुं न हो दी वे॥ ॥कृपा नृदे विनु पा के कला ती ते निपे कने॥
 कला कला मा सु स दे कला मंगल दे उते॥ ३॥ कला स्ये कला नृशाली विदिता॥ वि स नो नृदे॥ कला नृ
 उ प्रिये ती मे कला नृशाली निदिता॥ ४॥ कला लें उ तिल के तां न के कला वदिने॥ सवी लक्ष्मी प्रदे
 विष्णु वीन का प्रदात व॥ ५॥ अमी री का ममी कला वत वी नी मल प्रदे॥ ६॥ नृ निन मसै सु ब्रह्म वा
 निनमोस्तुते॥ ६॥ अमु कै रत का निगी नमो अ निन मदी नी॥ ७॥ अमी लो वन निगी सि वं उ उ विना
 सि नि॥ ८॥ नृ कला कला ने दे विष्णु तां स न निन दि नि॥ नमः सतां स्या निगी है लोका वदे नमः॥
 ॥७॥ दे वि दे दि पं नृशाली दे वि दे दि पं नृशाली॥ अमी री दि न न दे दि का ममी मौ न दे दि मे॥ सु गतां
 स्य स्य को रा नृशाली दे दि नि स्या निव॥ १०॥ दे वि दे दि पं नृशाली॥ इदं त विष्णु सं कुत॥ १०॥ ॥उ
 ता दि स्या मा दं नितां त त ह वी प्रला स्य मे॥ ना ह्या मू लो वन रातैः स्य स्ये वी कृपे सु गी॥
 त कला लां प्र क ये नितां कला प्र क० त वा कला॥ विष्णो नात वग्ये नितां मम तां ता का नि

[illegible]





॥ सी ॥ ॥ न व न ती व त प्र न नः सी म न पी म म सु ॥ ॥

परिग्रहण संख्या २२२६ ✓ (30)

(7)